शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भारत में अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता का अध्ययन

खेमचंद (शोधार्थी)
प्रोफे.रीटा शर्मा (शोध निर्देशक)
श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय,
सीईटी, केशव विद्यापीठ
जयपुर, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

शिक्षा का केन्द्र अध्यापक है और अध्यापकों की गुणवत्ता प्रत्येक क्षेत्र में प्रतिबिम्बित होती है। जहाँ तक भवन, प्रयोगशाला पुस्तकालय व आधारभूत सुविधाओं की बात है वह अधिकांश संस्थाओं में लगभग एक जैसी रहती है। कुछ संस्थाओं की प्रतिष्ठा अधिक होती है जिससे आकृष्ट होकर छात्र वहाँ प्रवेश लेते है। ये अन्तर शिक्षकों की गुणवत्ता के कारण होता है। वर्तमान में अध्यापक शिक्षा की समीक्षा आवश्यक है। गुणवत्ता केवल संसाधनों की उपलब्धता से नहीं लायी जा सकती, बल्कि मूल्यों के संरक्षण और उसे व्यवहार में अपनाकर भी हासिल किया जा सकता है। प्रस्तुत शोधपत्र में अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

अध्यापक शिक्षा से तात्पर्य उस शिक्षा से है जो भावी शिक्षक को एक कुशल, योग्य एवं सफल अध्यापक बनने के लिए प्रदान की जाती है। अध्यापक शिक्षा का सम्बन्ध सीधे तौर पर विद्यालयी शिक्षा से है, क्योंकि अध्यापक शिक्षा के द्वारा विद्यालय के लिए शिक्षकों को तैयार किया जाता है। अध्यापक शिक्षा का सम्बन्ध सिर्फ शिक्षण कला में निपुणता से नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य भावी शिक्षकों का व्यक्तित्व, सामाजिक, व्यावसायिक एवं नैतिक विकास कर उन्हें अध्यापक के विभिन्न उत्तरदायित्वों को सफलतापूर्वक एवं प्रभावशाली ढंग से सम्पन्न करने योग्य बनाता है।

आज अध्यापक शिक्षा का कार्य और भी कठिन और चुनौतीपूर्ण हो गया है। वर्तमान में आध्यापक शिक्षा के पाठ्यक्रम में निरंतर बदलाव हो रहे हैं। मूल्यांकन की नई चुनौतियाँ एवं शिक्षण विधियों एवं प्रविधियों से सम्बन्धी शोध, अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र को व्यापक बना रहे है। एक अच्छे एवं कर्त्तव्यनिष्ठ अध्यापक के लिए न केवल कक्षा शिक्षण में प्रवीण होना आवश्यक है, बल्कि उसे अध्यापक के अन्य दायित्वों के पालन में पारंगत होने की आवश्यकता है। परीक्षा एवं मूल्यांकन, अनुशासन, विद्यालय प्रशासन, पाठ्य सहगामी क्रियाओं का संचालन, समाज में शिक्षा की महत्ता की स्थापना जैसे कार्य भी अध्यापक को करने होते हैं और अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम का सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान उसे इन विभिन्न प्रकृति के कार्यों के संपादन के लिए तैयार करता है।

उद्देश्य

भावी अध्यापकों का व्यक्तिगत, सामाजिक, व्यावसायिक एवं नैतिक विकास कर उन्हें

अध्यापक के विभिन्न उत्तरदायित्वों को सफलतापूर्वक एवं प्रभावशाली ढंग से सम्पन्न करने योग्य बनाना है।

अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता सुधार के लिए नीतिगत प्रयास

यदि हम विभिन्न नीतिगत दस्तावेजों को देखे तो सभी में अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति चिन्ता और उसमें सुधार के सुझावों को देख सकते हैं। शिक्षा, विशेष रूप से विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता, अध्यापकों की सक्षमता और वृत्तिक्ता से प्रत्यक्षतः सम्बद्ध है। इस मान्यता के साथ स्वतन्त्र भारत में शिक्षा से जुडे. प्रत्येक नीतिगत दस्तावेजों यथा विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948), माध्यमिक शिक्षा आयोग (1953), शिक्षा आयोग (1964), कोठारी आयोग, चट्टोपाध्याय समिति की रिपोर्ट (1990) में अध्यापक शिक्षा के विस्तार गुणवत्ता सुधार और आकलन व प्रत्ययन के सन्दर्भ में सुझाव दिये गए हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) ने सेवापूर्ण और सेवारत अध्यापक शिक्षा को परस्पर सम्बन्धित माना। सन 1988 में पुनः अध्यापक शिक्षा की पाठ्यचर्या की नई रूप रेखा प्रस्तुत की गई। इसमें बालकेन्द्रित शिक्षा की मान्यताओं के अनुरूप अध्यापक के लिए सुगमकर्ता, सीखने के परिवेश के निर्माणककर्ता विभिन्न वृत्तिक कौशलों से युक्त, प्रभावी सम्प्रेषणकर्ता जैसे विशेषणों का प्रयोग किया गया।

21वीं शताब्दी का पहला दशक अध्यापक शिक्षा की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण दशक रहा। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 के द्वारा शिक्षा की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण ज्ञान मीमांसीय और शिक्षण शास्त्रीय सुधारों को सुधारा गया।

अध्यापक को 'ज्ञान का दाता' न मानकर 'ज्ञान का सहनिर्माता' माना गया। अध्यापक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (2009) भी अध्यापक को एक मननशील अभ्यासकर्ता मानती है और अध्यापक की परिकल्पना सहृदय अध्यापक के रूप में करती है।

अध्यापक शिक्षा के लिए नई-पहल : चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएँ

विगत दशकों में तैयार की गई राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, अध्यापक शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2009 और न्यायमूर्ति जे.एस.वर्मा समिति की रिपोर्ट, 2012 ने अध्यापक शिक्षा में आमूल-चूल बदलाव की सिफारिश की है। ऐसी स्थिति में नये तरीकों के विचारों के जनन और उनका प्रसार विश्वविद्यालयों का दायित्व बनता है। इस दिशा में N.C.E.R.T.के क्षेत्रीय कॉलेजों और केन्द्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय के बी.एल.एड. कार्यक्रम में अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में एक नए और प्रगतिशील चलन का उदाहरण प्रस्तुत किया है। इसी क्रम में N.C.E.R.T., N.C.T.E तथा केन्द्रीय शिक्षा संस्थान दिल्ली विश्वविद्यालयों के द्वारा द्वि-वर्षीय अध्यापक शिक्षा (बी.एड.) पाठ्यचर्या को भी प्रस्तुत किया गया है।

सम्पर्क, संवाद और सृजन : प्रगतिशील अध्यापक शिक्षा की फलक

अध्यापक शिक्षा के बदलाव से जुडे. सवालों के केन्द्र में उच्च शिक्षा में अध्यापक शिक्षा का स्थान गुणवत्ता लिए पाठ्यचर्या की पुनः संरचना और उसके क्रियान्वयन के पक्षों को मजबूत करने के रास्तों तथा शिक्षा और सामाजिक सरोकारों के बीच सार्थक संवाद की स्थापना की संभावना को

रखना चाहिए। इस प्रकार के प्रयासों से ही हम ऐसे भावी अध्यापकों की कल्पना कर सकते हैं, जो स्वयं में सशक्त और आलोचनात्मक दृष्टि रखते हुए वृहत्तर सामाजिक संदर्भों में अपनी भूमिका समझ सके, जो विद्यार्थी की चेतना के प्रस्फुटन, उनकी जिज्ञासाओं को प्रेरित करने का माध्यम बन सके और उनकी सृजनात्मकता व सीखने की इच्छा का पोषण कर सके।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय स्तर पर अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए जारी कवायद स्वागत योग्य है, लेकिन इस पूरी कवायद में हमें कुछ सवालों को ध्यान में रखना होगा। हमें ध्यान रखना होगा कि गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा को उपलब्ध कराने के लिए पूर्व प्राथमिक शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा और माध्यमिक शिक्षा व उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के लिए अध्यापकों को तैयार करने की आवश्यकता है। अतः अध्यापक शिक्षा के अन्तर्गत इन सभी स्तरों के अध्यापकों की तैयारी को शामिल किया जाए।

उच्च शिक्षा विद्यार्थी को पहचान निर्माण के बजाय पहचान विग्रह की और ढ़केलता है। जहाँ विद्यार्थी खुद का चिन्तन और विचारों के विकास के बजाए शार्टकट ढूढ़ता रहता है। आज जरूरत है कि शिक्षा में अध्ययन-अध्यापन के तरीकों को भी शिक्षा के समकालीन सरोकारों से जोड़ा जाए। उसके अभ्यासों को अद्यतन और व्यावहारिक किया जाए। ऐसा करने पर ही उच्च शिक्षा, अध्यापक शिक्षा को सशक्त करने में अपनी भूमिका अदा कर पाएगी।

संदर्भ ग्रन्थ

1 एन.सी.ई.आर.टी. (1978) टीचर एजुकेशन करीकुलम : ए फ्रेमवर्क, नई दिल्ली-एन.सी.ई. आर.टी।

2 एन.सी.टी.ई. (1998) करीकुलम फ्रेमवर्क फॉर क्वालिटी टीचर एजुकेशन, नई दिल्ली, एन.सी.टी.ई.।

3. N.C.E.R.T. (2005) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (2005) नई दिल्ली।

4. N.C.T.E. (2005) नेशनल केरीकुलम फ्रेमवर्क फॉर टीचर एजुकेशन : टुअर्ड्स ए ह्यूमेन एण्ड प्रोफेशनल टीचर।

5 भारत सरकार (1986), नेशनल पॉलिसी ऑफ एजुकेशन।

6 भारत सरकार (2009), शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009

7 जितेन्द्र लोढ़ा (2013), नई सदी की चुनौतियाँ और अध्यापक शिक्षा, आधुनिक भारतीय शिक्षा N.C.E.R.T. नई दिल्ली वर्ष 34, अंक 2 अक्टूबर 2013, पृ.सं. (14-18)

8 पाटीदार जितेन्द्र कुमार (2015) : मैं हूँ शिक्षक शिक्षा, भारतीय आधुनिक शिक्षा, N.C.E.R.T. नई दिल्ली, वर्ष 35, अंक 3 जनवरी, 2015, पृ.सं. (10-12)